।। सुयं मे आउसं ।।

श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

वि.सं. २०७४ • वर्ष - २ • अंक - १ जून २०१८

श्रुतसंबंधी छह महान कार्य

मुनिश्री प्रशमरतिविजयजी म.सा.

हम सब बचपन से पुस्तकों का आधार लेकर लिखना-पढना सीखते आए हैं। छपी हुई पुस्तिकाएं बालमंदिर से लगाकर आज तक हमारे हाथों मे रहती आई हैं। कदाचित ये प्रकाशित पुस्तकें हमें मिली ही न होती तो आज हमारी हालत कितनी बदतर होती। यह कल्पना ही हमें चौंका देती है। आजकल हमारा समूचा जीवन-व्यवहार इन प्रकाशित पुस्तकों पर अवलंबित हो चुका है। १५६४ वर्षों के पहले का समय याद करें और तब का गुजरा इतिहास नजरों के सामने रखा जाए तो दो बातें मुख्यतया समझ में आती है-

पहली बात - महावीर स्वामी भगवान के मोक्ष जाने के पश्चात् ९८० वर्ष तक संपूर्ण श्रमण-संस्था पुस्तकों की दुनिया से विलग थी। १५६४ वर्ष पूर्व हाथ से लिखी गई पुस्तकों का उपयोग श्रमणसंस्थाओं द्वारा स्वीकृत हुआ। उक्त साहित्य को हस्तलिखित ग्रंथ जैसा आदरणीय नाम प्राप्त हुआ।

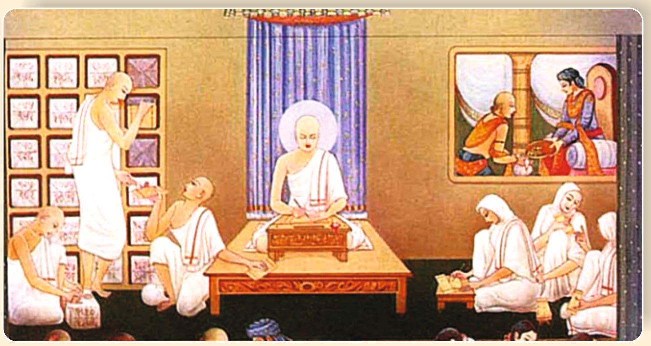

आगम वाचना

दूसरी बात - पिछले डेढसौ वर्षों में "प्रिन्टेड बुक्स" का जो प्रचलन विकसित हुआ वह पूर्वकाल में विशेषतः नहीं था। अर्थात पिछले १५६४ वर्षों में से २०० वर्ष घटा दिये जाए तो शेष १३६४ वर्ष दरम्यान प्रकाशित पुस्तकें उपलब्ध नहीं थी और इससे पूर्व के ९८० वर्षों के दरम्यान तो प्रकाशित पुस्तकों की चर्चा का प्रश्न ही नहीं उठता है।

सारांश इतना ही है कि महावीर स्वामी भगवान के मोक्षगमन पश्चात् अर्थात् २३४४ वर्षों तक पुस्तकों का अस्तित्व ही नहीं था फिर भी जैनशासन की तमाम व्यवस्थाएं अखंडित रूप से संचालित रहती थी। शुरुआती के ९८० वर्षों तक तो हस्तलिखित ग्रंथों का उपयोग भी नहीं था। बस, गुरु जो बोले विद्यार्थी वह सब सुनकर (बिना लिखे-पढे) सीख ले-समझ ले। यह पद्धति उस समय प्रवर्तित थी। इस पद्धति को श्रुत-अभ्यास कहा जा सकता है। ९८० वर्षों के बाद श्रुतलेखन की शुरुआत हुई और जो लिखा गया उसे उसी के आधार पर पढने की शुरुआत भी हुई।

उपरोक्त हस्तलिखित ग्रंथों ने शासन को गतिमान किया। इस श्रुत का लेखन करनेवाले कौन थे? केवलज्ञानी अथवा पूर्वधर महात्मा? उत्तर है - ना। श्रुतलेखन करनेवाले या तो मतिज्ञानी थे अथवा श्रुतज्ञानी थे। इनमें भी दो और प्रकार भी देखने में आयें। एक विद्वान महात्मा लेखन करते थे। प्राचीन ग्रंथों के लिए संपूर्ण आदर और श्रद्धापूर्वक कबूल करना चाहिए कि लेखन करनेवाले लिपिकारों के द्वारा हमारे महान ग्रंथों में लेखन के समय में त्रुटियों का प्रवेश हुआ है। ये त्रुटियां लिपिकारों की है लेकिन इसका ध्यान नहीं रखा तो यह त्रुटी, त्रुटी नहीं है ऐसा व्यवहार प्रचलित हो जाएगा।

प्राचीन लेखन पद्धति

आजकल की प्रचलित स्तुतियों के उदाहरण रख रहा हूं - रत्नाकरपच्चीसी की पहली कडी इस तरह है -

"मंदिर छो मुक्तितणी मांगल्यक्रीडाना प्रभु" मगर प्रायः सब लोग क्या बोलते है? **मुक्तितणी** के स्थान पर **मुक्तितणा** बोला जाता है। **मुक्तितणी-मांगल्यक्रीडा** इस शब्द का प्रयोग व्याकरण के दृष्टि से शुद्ध है। तणी के बदले तणा कर दिया गया जो कि अशुद्ध है। ऐसा ही एक अन्य उदाहरण है - **"जे दृष्टि प्रभु दर्शन करे....."** इस स्तुति की तीसरी पंक्ति है - **"पीये मुदा वाणी सुधा ते कर्णयुग ने धन्य छे...."**। प्रायः हम सब **मुदा** के बदले **मुधा** बोलते हैं जो पूर्णतया अशुद्ध उच्चारण है।

जिस तरह वर्तमान स्तुतियों में उपरोक्त अशुद्धियां प्रवेश कर चुकी है उसी तरह प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों में भी लिपिकारों के कारण ऐसी अनेक गलतीयां जुड गई है। ऐसी अशुद्धियां अगर नहीं पकडी गई तो नये संकट उत्पन्न होते रहेंगे। अनेक वर्षों से **स्निग्धं पितृघ्नम्** यह वाक्य चलता आ रहा है जिसका अर्थ होता है कि **"घी का उपयोग करने से पिता का नाश होता है।"** यह वाक्य शंकाशील बना। प्रामाणिक संदर्भ के अभाव से अब तक सुधार नहीं हो पाया था। श्रुतभवन के विद्वत्-परिषद की नजर इस पर पडी और इसके लिए सुंदर कार्य संपन्न हुआ। यह वाक्य किसी अन्य प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ में भी ऐसा ही मिलता है तो इसे अशुद्ध नहीं कहा जा सकता क्योंकि यहां प्रश्न श्रद्धा

का है। ग्रंथ के मूल कर्ता कोई भूल करते नहीं। ग्रंथकार त्रुटि रहित ग्रंथ निर्माण करते हैं। जब जब उक्त ग्रंथ की प्रतिलिपि अन्य लोगों अर्थात लहियाओं द्वारा लिखी गयी तब ऐसी अशुद्धियों का समावेश होता है। जो गलतियां ग्रंथकारों ने की नहीं है और लहियाओं द्वारा हो चुकी है उन्हें ढुंढ निकालने का काम हमारा है। उन्हें सुधारने की जिम्मेदारी भी हमारी है। मुझे यह बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि प्राचीन समय के लहियाओं की अशुद्धियों को ढुंढ-ढुंढकर निकालना और उन्हें सुधारने का अत्यंत कठिण और जिम्मेदारीवाला कार्य पू. गणिवर श्री **वैराग्यरतिविजयजी** महाराज द्वारा अत्यंत श्रद्धापूर्वक और परंपरा की वफादारी के साथ हो रहा है।

लहियाओं द्वारा उत्पन्न अशुद्धियों को ढूंढ पाना बहुत मुश्किल और अटपटा काम है। कोई हस्तलिखित पांडुलिपि तीनसौ वर्ष पुरानी है और उसमें कोई वाक्य शंकास्पद मिलता है तब उसके निराकरण के लिए उसी ग्रंथ की चारसौ - पांचसौ वर्ष पुरानी पोथियों के आधार की जरुरत पडती है। मुश्किल यह है कि तीन सौ वर्ष प्राचीन कोई प्रत मिल जाए और उसकी और भी पुरानी

अर्थात चार-पांचसौ वर्ष पुरानी प्रत आसानी से नहीं मिल पाती है। ऐसे प्राचीन प्रत मिले तभी प्रश्नों का निराकरण होगा। दूसरी बात पोथी भी मिल जाए मगर ग्रंथ की लिपि तथा भाषा को समझनेवाले विद्वान उपलब्ध होना और भी कठिन है।

श्रुतभवन ने जो कार्य अपने हाथों मे लिए है उसमें से प्रथम कार्य है- **अशुद्धियों को ढूंढ निकालना,** उसे समझना और उसमें प्रामाणिक सुधार करना है। इस प्रथम कार्य के लिए जिन आवश्यक साधन सामग्रियों की जरुरत होती है, श्रुतभवन उस जरुरत को पुरा करने के लिए दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य भी करता है। यह कार्य है- **संपूर्ण भारत में उपलब्ध तमाम हस्तलिखित पोथियों की "स्केन कोपी" एक ही कंप्युटर में सोफ्टकोपी के रूप में संग्रहीत करने का भगीरथ पुरुषार्थ।** एक अनुमान के अनुसार जैन हस्तलिखित पोथियों की उपलब्ध संख्या वर्तमान में लगभग बीस लाख जितनी है। ये पोथियां संपूर्ण भारत में भिन्न भिन्न राज्यों के भिन्न भिन्न शहरों एवं ग्रामों में स्थित संस्थाओं अथवा व्यक्तियों के पास थोडी थोडी संख्याओं में संग्रहित रूप से उपलब्ध है। प्रत्येक पोथी एक स्थान पर, एक ही लायब्रेरी में एक साथ मिलना संभव नहीं है। श्रुतभवन का दूसरा कार्य अथवा लक्ष्य यही है कि उपरोक्त संपूर्ण बीस लाख पोथियों की स्केनिंग की गयी प्रतियों की कोपी एक ही कंप्युटर में संग्रहित किया जाए। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अब तक लगभग ३५ लाख पन्नों का स्केनिंग हो चुका है। जिस दिन समूची बीस लाख पोथियों के एक एक पन्ने स्केनिंग होकर एक ही स्थान पर संग्रहित हो जाएगी उस दिन संशोधन के कार्यो को सरलता हांसिल हो पाएगी। आज जो काम दो वर्षो में पूरा हो पाता है वही कार्य संग्रह होने के बाद दो महिनों में ही संभव हो सकता है। मात्र स्केनिंग कर लेने से ही ग्रंथ उपयोग में नहीं आ जाएंगे जरुरी यह होगा कि जिन जिन ग्रंथों का स्केनिंग होता है उन सब का पद्धतिनुसार विस्तृत सूचिकरण करना भी जरूरी होता है। ऐसे सूचिकरण की भी एक स्वतंत्र प्रक्रिया होती है। श्रुतभवन का तिसरा महत्त्वपूर्ण कार्य है - **स्केन हुए ग्रंथों का परिपूर्ण केटलोग तैयार करना।**

श्रुतभवन का चौथा कार्य है - **अद्यावधि अप्रगट ग्रंथों को प्रकाशित करने का उपक्रम।** आज तक जिनके नाम भी ना सुने गए हो ऐसे अनेक प्राचीन ग्रंथ श्रुतभवन को प्राप्त हुए है जिन्हें संशोधनपूर्वक प्रकाशित किया जाए। ज्ञानप्रेमियों के लिए ये अलब्धपूर्व ग्रंथ बडे खजाने के रूप में प्राप्त होते रहेंगे।

श्रुतभवन का पांचवा कार्य है - **जिनरत्नकोश का नविनीकरण।** श्री हरी दामोदर वेलणकरजी ने बरसों पहले हमारे प्राचीन ग्रंथों की एक सूचि तैयार की थी। एक अनुमान है कि प्राचीन जैन ग्रंथों की संख्या ३५००० तक है। जिनकी भाषा प्राकृत, संस्कृत अथवा अपभ्रंश है। इन ग्रंथों के संदर्भ में विस्तृत जानकारियों के साथ परिपूर्ण सूचि तैयार करना जो आंतरराष्ट्रीय स्तर के संशोधन में भी उपयोगी बन सके। उसी मुताबिक यह अत्यंत बृहत्कार्य श्रुतभवन में अविरत चल रहा है।

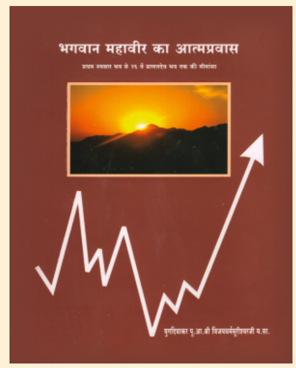

प्रकाशन

श्रुतभवन का छठा कार्य है - **अर्वाचीन लेखकों के पुस्तकों का प्रकाशन।** यह कार्य वर्तमान एवं भविष्य की पीढी के लिए अत्यंत उपयोगी है।

श्रुतभवन के प्रथम पांच कार्यों का गौरव कितना उंचा है इसकी तो मात्र कल्पना भी कठिन है। आजकल प्राचीन ग्रंथों का मुद्रण अनेक संस्थाएं करवा रही है और प्राचीन ग्रंथों को पुनः हस्तलिखित स्वरूप में अवतरित करवाने का भव्य पुरुषार्थ भी अनेक संस्थाओं द्वारा हो रहा है।

श्रुतभवन संशोधन केंद्र पुणे की Uniqueness ग्रंथसंशोधन की प्रणाली है। पू. गणिवर्य श्री **वैराग्यरतिविजयजी** महाराज के पूर्ण मार्गदर्शन में देश की भिन्न भिन्न 'युनिवर्सिटीज्' से विश्वविद्यालयीन स्तर का शिक्षण प्राप्त भाषाविद विद्वान यह महान कार्य कर रहे है।

सैंकडो वर्ष पूर्व **"घी पिता का नाश करता है"** जैसा वाक्य ग्रंथकार के नाम पर आरोपित बन गया था उस अशुद्धि को श्रुतभवन संशोधन केंद्र ने अन्य प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का आधार लेकर मूल ग्रंथकार को अभिप्रेत शुद्ध वाक्य ढूंढ निकाला - **"घी पित्त का नाश करता है" स्निग्धं पित्तघ्नम्।** ग्रंथकार की अनुपस्थिति में ग्रंथकार को अभिप्रेत शुद्ध वाक्य ढूंढ निकालने की प्रक्रिया बहुत बडी सिद्धि मानी जाएगी।

शुद्धिकरण की इस प्रक्रिया को प्रत्यक्ष देखने तथा समझने के बाद विविध समुदाय के गच्छाधिपति भगवंतों, सूरिभगवंतों, श्रमण-श्रमणी भगवंतों ने श्रुतभवन को भरपूर आशीर्वाद प्रदान किये हैं। भारत के अनेक शीर्षस्थ विद्वानों, भाषाविदों एवं शोधकर्ता विद्वानों ने श्रुतभवन संशोधन केंद्र की गतिविधियों को देखने के लिए आग्रहपूर्वक उपस्थिति दर्ज कर रहे है।

भविष्य की अनेक शताब्दियों में जब भी प्राचीन ग्रंथों के संपादन, संशोधन संबंधी क्षेत्रों के जो भी कार्य होंगे तब उस यात्रा में श्रुतभवन संशोधन केंद्र, पुणे द्वारा पकडी गयी पगदंडी का उपयोग होता रहेगा इस बात में तनिक भी शंका नहीं है।

(नागपुर में दिए हुए विशेष व्याख्यान का सारांश ८-४-२०१८)

समाचार

● दि. ४.२.१८ के दिन मुंबई युनिवर्सिटी जैन चेअर के अध्यक्ष डॉ. बिपिन दोशी श्रुतभवन पधारे। उन्होंने २००० महाविद्यालयीन विद्यार्थिओं को प्राथमिक जैन तत्त्वज्ञान का प्रशिक्षण दिया है।

● प.पू. आ. श्री केसरसूरिजी म. सा के पू. आ. श्री हेमप्रभसूरीश्वरजी म. सा . के शिष्यरत्न पू. आ. श्री विज्ञानप्रभसूरिजी म.सा. ने दि. ५.३.१८ को श्रुतभवन पधारकर आशीर्वाद प्रदान किये।

● प.पू. आ श्री विजय प्रेम-भुवनभानुसूरीश्वरजी म. के समुदायवर्ती चालीस से अधिक मासक्षमण के आराधक तपस्वी पंन्यासप्रवर श्री हंसरत्नविजयजी गणिवर दि. १४.३.१८ को श्रुतभवन पधारे। उनका ५७ वा उपवास था।

● प.पू.आ श्री सिद्धिसूरिजी म. के समुदाय के युवाचार्य श्री नररत्नसूरिजी म.सा. दि. ५.४.१८ के दिन श्रुतभवन पधारे। दो दिन के निवास दरम्यान उनके परिवार के पूज्य भगवंतों ने शास्त्र संशोधन के बारे में मार्गदर्शन प्राप्त किया।

● दि. २७.४.१८ के दिन परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचंद्र-सूरीश्वरजी म. के वरिष्ठ आचार्यदेव श्री विजय मुक्तिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. श्रुतभवन पधारे। साथ में पू. पं. श्री हितरत्नविजयजी ग. तथा पू. मुनिवर श्री दिव्यभूषणविजयजी म. सा भी पधारे थे। पू. आचार्य भगवंतों ने श्रुतभवन की प्रवृत्तियों का रसपूर्वक निरीक्षण करके प्रेरणास्पद आशीर्वाद प्रदान किये। दि. २२.४.१८ के दिन पू. आचार्य भगवंत के ६४ वें दिक्षादिन के उपलक्ष्य में बृहत् टिप्पनिका, धर्मबिंदु संगतिवृत्ति और मारो प्रिय श्लोक इन पुस्तकों का संघार्पण किया।

● पूज्य आचार्यदेव श्रीकलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा तथा सा. श्रीजिनरत्नाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में दि.१०.०३.१८ के दिन वापी में श्रुतभवन संशोधन केंद्र द्वारा प्रकाशित चार ग्रंथों का विमोचन समारोह संपन्न हुआ।

● श्री जागनाथ श्वे. मू. जैन संघ राजकोट में गूढार्थतत्त्वालोकः ग्रंथका विमोचन संपन्न हुआ। इस ग्रंथ में पू. मु. श्री भक्तियशविजयजी म.सा. ने ४०० श्लोक पर ९०,००० श्लोकों की रचना की है। इस ग्रंथ को १४ भाग में विभाजित किया है। उनमें से एक ग्रंथ की प्रस्तावना पू. गणिवर्य वैराग्यरतिविजयजी म. सा ने लिखी है।

● श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ जिनालय, वासुदर्शन, पाल - सुरत में पूज्य मुनिराजश्री राजपुण्यविजयजी म.सा. तथा पूज्य मुनिराजश्री राजसुंदरविजयजी म.सा. की पावन निश्रा में श्रुतभवन संशोधन केंद्र द्वारा प्रकाशित मारो प्रिय श्लोक पुस्तक का विमोचन समारोह संपन्न हुआ।

● दि. ८.०४.२०१८ के दिन नागपुर में पूज्य मुनि प्रवरश्री प्रशमरतिविजयजी म.सा. की पावन निश्रा में कप्पसुत्तं, धर्मबिंदु, लक्षणसंग्रह इन पुस्तकों का संघार्पण करते हुए श्री राजुभाई महेता, बिपिनभाई महेता, गणेशजी जैन, निखिलभाई कुसुमगर।

● रविवार दि. २०-५-२०१८ के दिन वागड गुरुकुल, मुंबई में पूज्य आचार्यश्री आनंदवर्धनसूरीश्वरजी म.सा. तथा पूज्य पंन्यास-प्रवर श्री आत्मदर्शनविजयजी म.सा. की पावन निश्रा में श्रुतभवन संशोधन केंद्र द्वारा प्रकाशित मारो प्रिय श्लोक पुस्तक का विमोचन समारोह संपन्न हुआ।

श्रुतभवन संशोधन केंद्र कार्य विवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प के अंतर्गत उपदेशरत्नाकर तथा कारकप्रकरणसंग्रह के अंतर्गत १३ कृतियों का संपादन संपन्न हुआ। श्रुतदीप-२, अढारपापस्थानक कृति संग्रह, कविरहस्य, श्रेयांसजिनचरित एवं लोकप्रकाश का संपादन कार्य प्रवर्तमान है।

वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प के अंतर्गत आ.श्री रत्नाचलसूरीश्वरजी म.सा., आ.श्री मुनिचंद्रसूरीश्वरजी म.सा., श्री.राजसुंदरसूरीश्वरजी म.सा., आ.श्री राजयशसूरीश्वरजी म.सा., आ.श्री तीर्थभद्रसूरीश्वरजी म.सा., हेलिन डि जॉन्कहिअर (Ghent University, Belgium) को हस्तलिखित प्रत संबंधी माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

प्रतिभाव

I am delighted and thankful to receive your News Letter. It will greatly help me to know about your research work. I would like to receive your future issues too with great appreciation. Thank you so much for your all kind of support and hospitality during my visit last year.

Dr. Shobha Rani Dash, Otani University, Kyoto, Japan

अभिप्राय

It is a place of compassion and exudates perfection. I am really overwhelmed by the whole institution, the kindness of the Jaina monk and the supportiveness of the whole staff. Please continue the magnificent work for the welfare of whole world.

Dr. Mudagamuwe Maithrimurthi , Heidelberg University Germany

समाचार

पू. पं. श्री दिव्यचंद्रसागरजी ग., पू.मु. श्री आत्मरति-हितरतिविजयजी म.सा., पू. सा. श्री पुष्पदंताश्रीजी म., पू. सा. श्री शुभेच्छाकुमारीजी म. (लिंबडी संप्रदाय), पूना युनिवर्सिटी जैन चेअर पद पर नवनिर्वाचित डॉ. विमलजी बाफना, प्रो. डॉ. उगमराजजी डागा (पूर्व डीन, नैशनल लॉ युनिवर्सिटी, जोधपुर) इनका आगमन हुआ।

पू. गुरुदेव के निश्रा में दो जिनालयों का शिलास्थापन संपन्न हुआ। पू. मु. श्री प्रशमरतिविजयजी म.सा. का चातुर्मास यवतमाल में है। पू. सा. श्री जिनरत्नश्रीजी म. की प्रेरणासे दहेगाम, वापी की मनोविकास प्रायमरी स्कुल में जे. डी. शाह (केनडा) ने सरस्वती मूर्ति को अर्पण किया। उनका चातुर्मास अंकलेश्वर (गुजरात) है। बुधवार दि. १८-७-२०१८ के दिन प्रवेश है।

मैं अपने जीवन में अच्छे बूरे
सभी को महत्त्व देता हूँ।
जो लोग अच्छे होते हैं वे साथ देते हैं।
बूरे होते हैं वे अनुभव देते हैं।

- पू.मु.श्री वैराग्यरतिविजयजी गणिवर

प्रबंध संपादक
गौरव के. शाह (९८३३१३९८८३)

Printed Matter
Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre,
(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutbhavan YouTube channel